Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

# अनुवाद की सामान्य विशिष्टताएं: एक अध्ययन

**डॉ. सुधा सिंह**
सह आचार्य-संस्कृत विभाग, बाबू शोभाराम राजकीय कला, महाविद्यालय, अलवर (राज.)

**सारांश (Abstract):**
प्रस्तुत अध्ययन अनुवाद की सामान्य विशेषताओं, स्वरूप तथा उसके व्यावहारिक पक्षों का विश्लेषण करता है। अनुवाद को एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया गया है जिसमें एक भाषा के विचारों, भावों और आशयों को दूसरी भाषा में सार्थक एवं प्रभावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। यह केवल भाषाई रूपांतरण नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और वैचारिक समन्वय की प्रक्रिया भी है, जो विभिन्न भाषाओं और समाजों के बीच सेतु का कार्य करती है। अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि अनुवाद एक जटिल, बहुपक्षीय और सर्जनात्मक क्रिया है, जिसमें अनुवादक, स्रोत भाषा तथा लक्ष्य भाषा तीनों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। सफल अनुवाद के लिए आवश्यक है कि अनुवादक दोनों भाषाओं पर अधिकार रखते हुए मूल आशय को सुरक्षित रखे और लक्ष्य भाषा की प्रकृति, शैली तथा प्रवाह के अनुरूप उसे प्रस्तुत करे। विशेष रूप से अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद के संदर्भ में यह बताया गया है कि शब्दशः अनुवाद के स्थान पर भावानुवाद को प्राथमिकता देनी चाहिए। इस प्रकार, अनुवाद एक कला और विज्ञान दोनों है, जो संप्रेषण को प्रभावी और सार्थक बनाता है।

**मुख्य शब्द (Keywords):** अनुवाद, स्रोत भाषा, लक्ष्य भाषा, भावानुवाद, भाषिक संरचना

## परिचय

किसी भाषा में कही या लिखी गई बात का किसी दूसरी भाषा में सार्थक परिवर्तन अनुवाद कहलाता है। अनुवाद की प्रक्रिया का इतिहास काफी पुराना है।

आज सारे विश्व में अनुवाद की आवश्यकता को अनुभव किया जा रहा है। विभिन्न भाषा–भाषी समुदायों के बीच सम्प्रेषण प्रक्रिया का महत्त्वपूर्ण घटक बनकर अनुवाद हमारे सामने आता है। अनुवाद न केवल दो भाषाओं बल्कि दो संस्कृतियों को निकट लाने का कार्य करता है। न केवल साहित्य वरन् शिक्षा, कानून, पर्यटन, दूरसंचार, प्रशासन, चिकित्सा, व्यापार तथा कृषि जैसे क्षेत्रों में भी अनुवाद की उपादेयता असंदिग्ध है। इस अर्थ में देखे तो अनुवाद अपने प्रयोजन में बहुआयामी बन चुका है। इस लेख में अनुवाद की सामान्य विशेषताओं की चर्चा करते हुए अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद के कुछ उपयों का विश्लेषण किया गया है।

संस्कृत में 'अनुवाद' शब्द का उपयोग शिष्य द्वारा गुरु की बात के दुहराए जाने, पुनः कथन, समर्थन के लिए प्रयुक्त कथन, आवृत्ति जैसे कई सन्दर्भों में किया गया है। "संस्कृत की 'वद्'

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

धातु से 'अनुवाद' शब्द का निर्माण हुआ है। 'वद्' का अर्थ है बोलना। 'वद्' धातु में 'अ' प्रत्यय जोड़ देने पर भाववाचक संज्ञा में इसका परिवर्तित रूप है 'वाद'। जिसका अर्थ 'कहने की क्रिया' या 'कही हुई बात'। 'वाद' में 'अनु' उपसर्ग जोड़कर 'अनुवाद' शब्द बना है, जिसका अर्थ है, प्राप्त कथन को पुनः कहना।"[प] इसका प्रयोग पहली बार मोनियर विलियम्स ने अंग्रेजी शब्द ट्रांसलेशन (ज्तंदेसंजपवद) के पर्याय के रूप में किया। इसके बाद ही 'अनुवाद' शब्द का प्रयोग एक भाषा में किसी के द्वारा प्रस्तुत की गई सामग्री की दूसरी भाषा में पुनः प्रस्तुति के सन्दर्भ में किया गया।

एक भाषा की विचार सामग्री को दूसरी भाषा में पहुँचाना अनुवाद है। हिन्दी भाषा में अनुवाद के लिए 'उल्था' शब्द का भी प्रचलन है। अंग्रेजी में ज्तंदेसंजपवद के साथ ही ज्तंदेबतपचजपवद शब्द का प्रचलन है जिसे हिन्दी में 'लिप्यन्तरण' कहा जाता है। अनुवाद और लिप्यन्तरण का अन्तर निम्न उदाहरण द्वारा समझा जा सकता है–

उसके सपने सच हुए–

His dreams became true- Translation

Uskay Sapney Sach Huey- Transcription

किसी भाषा में अभिव्यक्त विचारों को दूसरी भाषा में यथावत् प्रस्तुत करना अनुवाद है। जिस भाषा **से** अनुवाद किया जाता है, वह मूल भाषा या स्रोत भाषा हैं जिस भाषा **में** अनुवाद किया जाता है वह 'प्रस्तुत भाषा' या 'लक्ष्य भाषा' है। इस प्रकार स्रोत भाषा में प्रस्तुत भाव या विचार को बिना किसी परिवर्तन के लक्ष्यभाषा में प्रस्तुत करना ही अनुवाद है।

अनुवाद एक बहुपक्षीय, जटिल तथा साथ ही साथ एक सर्जनात्मक क्रिया है। अनुवाद की बहुपक्षीयता को देखते हुए इसकी परिभाषा कई दृष्टिकोणों से प्रस्तुत की गई है। मुख्य दृष्टिकोण तीन प्रकार के हैं– (प) अनुवाद एक प्रक्रिया है। (पप) अनुवाद एक प्रक्रिया अथवा/और उसका परिणाम है। (पपप) अनुवाद एक सम्बन्ध का नाम है।

पश्चिम में अनुवाद पर काफी व्यवस्थित कार्य हुआ है। हमारे यहाँ यह कार्य इतना सुव्यवस्थित एवं क्रमबद्ध तरीके से नहीं हो पाया है तथापि अब अनुवाद एक स्वतंत्र, व्यवस्थित विधा के रूप में स्थापित हो चुका है। अनुवाद की पारिभाषिक जटिलताओं में न उलझतें हुए हमें मौटे तौर पर यह समझना है कि अनुवाद एक प्रक्रिया है जिसके तीन पक्ष होते हैं– (प) अनुवादक (पप) स्रोत भाषा (पपप) लक्ष्य भाषा।

अच्छे अनुवाद का मुख्य लक्षण अनुवाद सा नहीं लगना है, जैसे अच्छी अदाकारी वही है जो अदाकारी ना लगे। एक भाषा में किसी भी विचार–भाव को अभिव्यक्त करने की अपनी प्रकृति होती है। जब अनुवाद किया जाता है तो एक भाषा की अभिव्यक्ति की प्रकृति दूसरी भाषा की अभिव्यक्ति की प्रकृति में रुपान्तरित होती है। इस रुपान्तरण में स्रोत भाषा की काफी

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

प्रकृति लक्ष्य भाषा में चली जाती है तथा लक्ष्य भाषा की अपनी प्रकृति काफी छूट जाती है इससे अनुवाद कृत्रिम व अस्वाभाविक लगने लगता है। अनुवादक जब शब्दशः अनुवाद करने लगता है तो अनुवाद अत्यंत बोझिल व निरर्थक हो जाता है। इसलिए अनुवादक को चाहिए कि वह अनुवाद शब्दों का नहीं बल्कि मूल आशय का करें। "आधार भाषा में जो आशय व्यक्त किया गया है, उसको लक्ष्य भाषा में, आशय के मूल सौन्दर्य को क्षति पहुँचाए बिना लाना ही अनुवादक का कार्य होना चाहिए।"[पप]

इसके लिए अनुवादक को (प) दोनों भाषाओं पर अच्छा अधिकार होना चाहिए। (पप) विषय की अच्छी जानकारी होनी चाहिए। (पपप) साथ ही अनुवाद की तकनीक से अच्छा परिचय होना चाहिए।

अनुवाद एक कला है। अनुवाद में प्रथम भाषा में अंकित मूल आशय को उसके सम्पूर्ण सांस्कृतिक तथा वैचारिक सन्दर्भ में आत्मसात करना चाहिए तथा द्वितीय भाषा के अपने सांस्कृतिक वैचारिक सन्दर्भ में मूल आशय को इस प्रकार प्रस्तुत करना चाहिए कि प्रथम भाषा का आशय भी क्षतिग्रस्त न हो और द्वितीय भाषा के अपने अन्दाज, प्रवाह, मुहावरा और प्रकृति भी अक्षुण्ण बनी रहे।

**अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवादः–** अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद करने के कुछ उपायों पर यहाँ विचार किया जा रहा है।

- अंग्रेजी के सम्पूर्ण अवतरण को ध्यान से पढ़ना चाहिए, यदि कोई शब्द या वाक्य समझ में नहीं आ रहा तो भी कोई बात नहीं। किसी भी अवतरण का आशय पूरे अवतरण में व्याप्त रहता है अतः सम्पूर्ण अवतरण को पढ़कर उसके मूल आशय तक पहुँचने की कोशिश करनी चाहिए। अवतरण का दूसरा–तीसरा वाचन इस कार्य को आसान बना देगा।
- अवतरण के आशय को समझ लेने के बाद यह विचार करना चाहिए कि इस सम्पूर्ण आशय को हिन्दी भाषा के अपने मुहावरे में, अपनी अभिव्यक्ति शैली में कैसे व्यक्त किया जा सकता है। लक्ष्य भाषा के मुहावरे की तलाश ही अनुवाद का पुनस्सृजन करने की प्रक्रिया है।
- अंग्रेजी और हिन्दी के बीच अनुवाद का लम्बा ऐतिहासिक रिश्ता है अतः दोनों भाषाओं अनेक वैचारिक सन्दर्भ अब तक समान हो चुके हैं। इसलिए अंग्रेजी के अनेक शब्दों की तुलना हिन्दी शब्दों के साथ स्थापित हो चुकी है। ज्ञान–विज्ञान की अनेक तकनीकी शब्दावलियाँ प्रकाशित हो चुकी है। इसलिए अनुवादक को मानक शब्दावलियों का प्रयोग

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

करना चाहिए ताकि अनुवाद मूल के अधिकाधिक निकट हो और वह अनावश्यक स्वेच्छाचारिता से उत्पन्न होने वाली भ्रान्तियों से भी बच सके।

- अरस्तू ने कहा है कि ″अनुवादक बुद्धिमानों की तरह सोचें किन्तु जनसाधारण की भाषा में बोलें।″ इसलिए अनुवादक को आम, प्रचलित शब्दों का प्रयोग करना चाहिए ताकि अनुवाद सहज लगे और उसमें प्रवाह या रवानगी बनी रहे। उदाहरण के लिए ॆजवउनबी का अनुवाद उदर न करके पेट करना, ब्तलपदह का अनुवाद रुदन के स्थान पर रोना करना।
- प्रत्येक भाषा में सन्दर्भ के अनुसार एक शब्द के अनेक अर्थ होते हैं तथा अलग–अलग सन्दर्भों में अलग–अलग शब्द एक–सा अर्थ देने लगते हैं। अनुवाद करते समय शब्द के स्थान पर शब्द ना बिठाकर उस सन्दर्भ में प्रचलित शब्द का प्रयोग करना चाहिए। जैसे भ्वउम को घर तथा गृह दोनों शब्दों में अनूदित किया जा सकता है, किंतु इनतदपदह ीवउम को जलता हुआ घर (न कि जलता हुआ गृह) तथा भ्वउम उपदपेजमत को गृह मंत्री (न कि घर मंत्री) अनुवाद करना उपयुक्त होगा। अंग्रेजी के एक वाक्य च्मतेवदे ूीव बंद कपfमितमदबपंजम इमजूममद हववक ंदक इंक बंद हपअम तमंस रनेजपबम का अनुवाद विवेकी व्यक्ति ही सच्चा न्याय कर सकते हैं, होगा क्योंकि अच्छे और बुरे में अंतर करने वाले व्यक्ति के लिए हिन्दी में एक शब्द प्रचलित है– विवेकी, जबकि अंग्रेजी में इसका ठीक समानार्थी शब्द कोई भी नहीं। अतः एक अच्छे अनुवाद के लिए भाषिक सन्दर्भों की समझ होना आवश्यक है।
- ″हर भाषा की अपनी वाक्य संरचना होती है। अनुवाद करने में हूबहू उसका रुपान्तरण जरुरी नहीं है। दूसरी भाषा की अपनी प्रकृति के अनुसार ही प्रथम भाषा को दूसरी भाषा में रुपान्तरित करना चाहिए।″[पपप] उदाहरणस्वरूप अंग्रेजी के वाक्य– जीम पदकमचमदकमदबम व िप्दकपं ॅ हतमंजसल कनम जव जीम दमूेचंचमते ूीपबी ूमदमक जीम प्दकपंदे ंहंपदेज जीम ठतपजपेी का अनुवाद ‘भारत को स्वतन्त्रता बहुत–कुछ समाचार–पत्रों के कारण प्राप्त हुई जिन्होंने भारतीयों में जागृति पैदा की अंग्रेजों के विरुद्ध, न करके भारत को स्वतन्त्रता बहुत–कुछ समाचार–पत्रों के कारण प्राप्त हुई जिन्होंने भारतीयों में अंग्रेजों के विरुद्ध जागृति पैदा की’, करना ठीक होगा।
- ″अनुवाद न शब्द का होता है न वाक्य का, बल्कि पूरे अवतरण का होता है, इसलिए शब्द और शब्द के संयोजन को, विशेष, रूप से एक वाक्य और दूसरे वाक्य के संयोजन को इस रूप में देखना चाहिए कि सम्पूर्ण अनूदित अवतरण में एक संगति, सुसम्बद्धता और प्रवाह स्थापित हो जाए और कोई बिखराव, टूटापन या अधूरापन न प्रतीत हो।″[पअ]

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

- प्रत्येक भाषा में अपनी लोकोक्तियाँ और मुहावरे होते हैं जिनके पीछे उन भाषा–भाषियों के अपने सांस्कृतिक सन्दर्भ होते हैं। इसलिए लोकोक्तियों एवं मुहावरों के ज्यों के त्यों अनुवाद प्रायः नहीं होते किंतु यह संभव है कि एक भाषा की लोकोक्ति दूसरी भाषा में भिन्न शब्दों एवं संरचनाओं में व्यक्त होती हो। अतः लोकोक्तियों, मुहावरों में भिन्न तरह से समानार्थकता बिठाने की कोशिश करनी चाहिए, जैसे only in a blue moon & छठे–चौमासे, oily tongue– चापलूस, Eye wash & हाथ की सफाई, To leave no stone unturned का एड़ी से चोटी तक ज़ोर लगाना, अनुवाद करना चाहिए।
- अंग्रेजी के वाक्य में पदों का क्रम कर्ता + क्रिया + कर्म होता है; जैसे– Shiv delivered a lecture. जबकि हिंदी में पदों का क्रम कर्ता + कर्म + क्रिया होता है; जैसे– शिव ने व्याख्यान दिया। अतः अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद में क्रिया और कर्म के इन स्थानों की भिन्नता को समझना चाहिए तथा हिंदी के अपने पद–क्रम के अनुरूप ही अनुवाद करना चाहिए।
- हिंदी में क्रिया का रूप सामान्यतः कर्ता के लिंग, वचन, पुरुष के आधार पर निर्धारित होते हैं इसलिए अंग्रेजी वाक्य के कर्ता को अच्छी तरह पहचान कर उसके अनुसार क्रिया का रूप निर्धारित करना चाहिए जैसे– The People of India were more or less peaceful before the Britishers came का हिंदी अनुवाद अंग्रेजों के आगमन से पूर्व भारतीय जनता कमोबेश शांत थी, किया जाता है। इसमें हमने च्मवचसम का अनुवाद जनता (स्त्रीलिंग, एकवचन) किया है। यदि च्मवचसम का अनुवाद लोग किया जाता तो क्रिया के लिंग और वचन दोनों बदल जाते, मसलन– भारत के लोग कमोबेश शांत ही थे। इसलिए अनुवाद से पहले कर्ता की पहचान आवश्यक है।
- अंग्रेजी भाषा में Articles और Prepositions का विशेष महत्त्व है जबकि हिंदी में Articles का प्रयोग नहीं होता और कई स्थानों पर Prepositions के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले कारक–चिह्न भी शून्य होते हैं, अतः हिंदी भाषा की प्रवृति के अनुसार अंग्रेजी के इस वाक्य He is a slave का अनुवाद वह एक गुलाम है के स्थान पर वह गुलाम है, करना सही होगा।
- अंग्रेजी में सहायक क्रियाओं द्वारा वाक्य को प्रश्नात्मक ( Does he play ?½] नकारात्मक (भ्म कवमे दवज चसंल) बनाया जाता है। सहायक क्रियाएँ काल को भी निर्धारित करके मुख्य क्रिया को कालमुक्त कर देती है; जैसे– क्पक ीम चसंल, हिंदी में सहायक क्रिया की ये क्रियाएँ नहीं होती हैं, अतः अनुवाद करते समय वाक्य के मूड़ और काल को

सहायक क्रियाओं द्वारा पकड़ने की कोशिश करनी चाहिए ताकि मुख्य क्रिया के स्वरूप के आधार पर भ्रांति उत्पन्न ना हो।

- अंग्रेजी में कर्म वाच्य (च्पअम अवपबम) का प्रयोग न केवल बहुत होता है बल्कि क्रिया के च्ंज च्तजपबपचंस रूप का प्रयोग भी बहुत होता है जो हिंदी की प्रकृति से बहुत अलग है। अंग्रेजी के भ्म ॅ जनतदमक वनज का अनुवाद– वह बाहर निकाल दिया गया, के स्थान पर उसे बाहर निकाल दिया तथा भ्म ॅ इमंजमद नच इंकसल का अनुवाद– वह बुरी तरह पीटा गया के स्थान पर उसे बुरी तरह पीटा अधिक उपयुक्त है।
- अंग्रेजी में क्पतमबज और पदकपतमबज `चममबी के रूपान्तरण की अपनी व्यवस्था है किंतु हिंदी में यह रूपान्तरण अधिक सरलता से हो जाता है। अतः क्पतमबज `चममबी का अनुवाद करते समय उसके क्रिया रूपों से भ्रमित होने की आवश्यकता नहीं हैं उदाहरणस्वरूप– अंग्रेजी के क्पतमबज `चममबी. भ्म ेंपकए भ्म पे हवपदह का हिंदी अनुवाद उसने कहा वह जा रहा है। किंतु पदकपतमबज `चममबी के वाक्य भ्म जवसक जींज ीम ॅ हवपदह का हिंदी अनुवाद यह नहीं करना चाहिए कि उसने कहा कि वह जा रहा था, बल्कि– उसने कहा कि वह जा रहा है, करना चाहिए।
- अंग्रेजी में डवकमस ंनगपसपंतपमे. ूपससए ूवनसकए उंलए बंदए बवनसक आदि का प्रयोग भावों को व्यक्त करने के लिए जिस रूप में किया जाता है, हिंदी में उसका ज्यों–का–त्यों अनुवाद नहीं किया जा सकता; जैसे– डंल प तमुमेज लवन जव समंअम जीपे चसंबम ध का अनुवाद– क्या मैं आपसे यह स्थान छोड़ने के लिए कह सकता हूँ ? न करके यह करना चाहिए– कृपया आप यहाँ से चले जाइये, इसी प्रकार– ूपसस लवन चसमेंम ंोा ीमत जव चतवअपकम उम दवजमे ? का अनुवाद होगा– कृपया आप उसे मुझे नोट्स देने के लिए कह दें।
- अंग्रेजी में ैमुनमदबम वि ज्मदेमे की रचना ऐसी होती है कि उसमें मुख्य वाक्यांश एवं आश्रित वाक्यांश के क्रिया रूपों की अपनी विशेषता होती है, अतः उनका अनुवाद करते समय सावधानी बरतनी चाहिए; जैसे– ॅपसस ीम पदवितउ लवन ूीमद ीम तमजनतदे ध का अनुवाद– क्या वह आपको– सूचित करेगा कि वह कब लौटता है ? नहीं होकर–क्या वह आपको सूचित करेगा कि वह कब लौटेगा, होगा। यहाँ त्मजनतदे का अनुवाद लौटता है न करके लौटेगा करना सही है। अन्य उदाहरण देखें– प् ूवतामक जींज प् उपहीज हमज `नबबमे का अनुवाद होगा– मैं सफल हो सकूँ इसीलिए मैंने काम किया।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

- अंग्रेजी में ज्पउम बसंनेमे में भविष्य काल हवपदह के प्रयोग से बन जाता है; जैसे I am going to purchase a new car for you यह वाक्य भविष्य काल का है जिसका अनुवाद— मैं आपके लिए नई कार खरीदूँगा या मैं आपके लिए नई कार खरीद रहा हूँ, होगा।

अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद करते समय इन सामान्य नियमों को ध्यान में रखा जाए तो लक्ष्य भाषा की आत्मा को सही, सटीक संदर्भों में जीवित रखा जा सकता है। अनुवाद इस तरह किया जाए कि वह अनुवाद जैसा न लगे। वह मौलिक रूप से लक्ष्य भाषा में ही लिखा हुआ लगे, जिसमें भाषा का सहज प्रवाह और जीवंतता बरकरार रहे। अनुवाद में मूल आशय सुरक्षित रहना चाहिए।

**निष्कर्ष (Conclusion):**

उपरोक्त अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि अनुवाद केवल शब्दों का रूपांतरण नहीं, बल्कि विचारों, भावों और सांस्कृतिक संदर्भों का समन्वित पुनर्सृजन है। यह एक जटिल एवं सर्जनात्मक प्रक्रिया है, जिसमें अनुवादक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। एक सफल अनुवाद के लिए आवश्यक है कि अनुवादक स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा दोनों पर समान रूप से अधिकार रखे तथा मूल पाठ के आशय, भाव और शैली को सुरक्षित रखते हुए उसे लक्ष्य भाषा में स्वाभाविक रूप से प्रस्तुत करे।

अध्ययन यह भी दर्शाता है कि शब्दशः अनुवाद अक्सर कृत्रिम और अस्वाभाविक हो जाता है, इसलिए भावानुवाद को प्राथमिकता देना अधिक उपयुक्त है। भाषा की संरचना, मुहावरों, सांस्कृतिक संदर्भों और व्याकरणिक भिन्नताओं को समझकर ही प्रभावी अनुवाद संभव है। विशेष रूप से अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद में इन तत्वों का ध्यान रखना आवश्यक है। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि अनुवाद एक कला और विज्ञान दोनों है, जो भाषाओं और संस्कृतियों के बीच सेतु बनाकर संप्रेषण को सशक्त, सहज और प्रभावी बनाता है।

**संदर्भ ग्रन्थ सूची**

---

[i] अनुवाद विज्ञान, सिद्धान्त और प्रविधि— डॉ. भोलानाथ तिवारी, किताबघर प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृ.सं. 9

[ii] वही, पृ.सं. 22

[iii] वही, पृ.सं. 68

[iv] अनुवाद कला सिद्धान्त और प्रयोग— डॉ. कैलाश चंद भाटिया, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, 2023, पृ.सं. 72